तुक

मृदुला गर्ग

तुक

कहानी

मृदुला गर्ग

अपने बारे में दो बातें आपको पहले ही बतला दूँ। पहली यह कि मैं उन बेवक़ूफ़ औरतों में से हूँ, जो अपने पति को प्यार करती हैं। या कहना चाहिए कि मैं ही एक बेवक़ूफ़ औरत हूँ, जो अपने पति को प्यार करती है। मेरी शादी को छह महीने हो चुके और इस बीच में बहुत-सी शादीशुदा औरतों से मिल चुकी हूँ। अपने सिवा मुझे कोई औरत नहीं मिली, जो अपने पति को दिल से चाहती हो। मैं जानती हूँ दिल से चाहना ऐसा जुमला है, जिसे सुन कर हम आज़िज़ आ चुके हैं। हर बाज़ारू क़िस्से, हर बंबइया फ़िल्म में इसका बार-बार इस्तेमाल किया जाता है। पर यह इस्तेमाल, चाहे वह कितना झूठा क्यों न हो, जुमले की सचाई को ख़त्म नहीं कर सकता। मेरी जान-पहचान की हर शादीशुदा औरत औरों को यह विश्वास दिलाते-दिलाते कि वह अपने पति को दिल से चाहती है, ख़ुद उस पर विश्वास भले करने लगी हो, मन से वह जानती है और मैं भी जानती हूँ कि ऐसा है नहीं।

पति का होना उनके लिए एक स्थिति है, जिसके भीतर से कुछेक सुखदायक स्थितियाँ पैदा होती हैं; जैसे बच्चों का होना, घर का होना, घर में ढ़ेरों काम होना और अपनी तरह के जोड़ों के साथ सामाजिक ताल्लुक़ात होना। पति का होना उनके लिए एक तरह का व्यवसाय है, जिसके माध्यम से उन्हें पैसा और व्यस्तता, दोनों मिलते हैं। आम व्यवसायों की तरह इसमें भी छोटी-मोटी उलझनें पैदा होती रहती हैं। कभी बच्चे बीमार हो जाते हैं, कभी चावल में पानी कम हो जाता है, तो सब्ज़ी में नमक ज़्यादा, और कभी अपनी तबीयत बिगड़ जाती है। और व्यवसायों की तरह, इसमें भी कभी ये उलझनें भीतर से न हो कर बाहर के सामाजिक दबावों के कारण पैदा हो जाती हैं। जैसे तब, जब चीज़ों के दाम तेज़ी से बढ़ने लगते हैं, या आम ज़रूरतों की चीज़ें बाजार से ग़ायब होने लगती हैं। बाँस से खींचातानी तो आम बात है ही। कभी पति जल्दी-जल्दी और ज़रूरत से ज़्यादा प्यार करके थका देता है, तो कभी कई-कई दिन (रात) बिना प्यार के गुज़ार, उबा देता है।

पर ये उतार-चढ़ाव ऐसे नहीं होते, जिनसे स्थिति के औसत चरित्र में कोई बदलाव आये या व्यवसाय के ठप हो जाने की नौबत आ जाये। यह व्यवसाय वाली बात अभी-अभी मेरी समझ में आयी है। उसके साथ मैं यह भी समझ गयी हूँ कि पति की ख़ुशी-नाख़ुशी, आकर्षण-विकर्षण, या रुचि- उदासीनता जैसे मेरे लिए ज़िन्दगी और मौत का सवाल बन जाती है, उनके लिए क्यों नहीं बनती।

एक मैं हूँ, जो पति के दफ़्तर से घर लौटने पर, उसके चेहरे से अपनी निगाहें हटा नहीं पाती। एक मैं ही हूँ,

जो प्याले में केतली से चाय डालते हुए या नमकीन की प्लेटें उसकी तरफ़ बढ़ाते हुए, उसके चेहरे पर आ रहे हर भाव को पढ़ने की कोशिश करती रहती हूँ। नतीजा यह होता है कि कभी मैं चाय छलका देती हूँ तो कभी नमकीन छिटका देती हूँ। इस पर उसके माथे पर शिकन उभर आती है, तो मैं भीतर ही भीतर मर लेती हूँ। एक मैं ही हूँ। बस, और कोई औरत यह बेवक़ूफ़ी नहीं करती।

दूसरी बात यह है कि मैं ताश नहीं खेल सकती। वाक़ई नहीं खेल सकती। ताश के पत्तों को सोच -सोच कर मेज़ पर डालना तो दरकिनार, हाथ में पकड़े-पकड़े उन्हें सिलसिलेवार लगाना भी मेरे लिए मुमकिन नहीं है। ताश खेलना मुझे पसन्द नहीं है या मुझे उससे नफ़रत है-यह कहने लायक़ हालत में भी मैं नहीं हूँ। वह तय करने का मौक़ा ही नहीं आ पाता। ताश के पत्ते हाथ में लेते ही मैं जड़ हो जाती हूँ। शायद आप लोगों ने पार्किंसन डिजीज़ (कंपाने वाले लकवे) का नाम सुना हो। उसका मारा, अपने बदन की हरकतों को क़ाबू में नहीं रख पाता। कुछ हरकतें आपसे आप होती रहती हैं। बीच-बीच में कुछ ऐसे क़हर के लम्हे भी आते हैं, जब वह कोई हरकत नहीं कर पाता। ताश के पत्ते हाथ में ले कर मुझ पर यही क़हर टूट पड़ता है। न मैं कुछ सोच पाती हूँ न कर पाती हूँ।

मेरा पति, उसका नाम नरेश है, स्टेट बैंक में चीफ़ अकाउण्टैण्ट है। वैसे मेरा नाम मीरा है, पर उसका कोई महत्त्व नहीं है। मेरा पति, नरेश, काफ़ी आकर्षक आदमी है। लम्बा-चौड़ा जिस्म, ख़ूबसूरत चेहरा, साँवला रंग, पैनी काली आँखें, लाल मांसल होंठ और तीखी नाक। अगर उसका चेहरा सिर्फ़ मुझे ख़ूबसूरत लगता तो आप कह सकते थे वह प्यार करने के कारण है। पर वह सचमुच ख़ूबसूरत है। सभी कहते हैं।

बस, मुझे उसकी तीखी नाक पसन्द नहीं हैं। कई बार मैं सोचती हूँ, अगर उसकी नाक तीखी न हो कर चपटी रही होती, तो वह इतना कार्यकुशल अकाउण्टैण्ट नहीं बन पाता और तब वह मुझे इतना ही प्यार करता, जितना अब मैं उसे करती हूँ।

आप कहेंगे, यह बिल्कुल बेतुकी बात है। और आप ठीक कहेंगे। तीखी नाक ख़ूबसूरत की पहली शर्त है। किसी से भी पूछ देखिए, वह यही कहेगा। मैं जानती हूँ। अगर नरेश की नाक तीखी न हो कर चपटी रही होती, तो लोग उसे कम ख़ूबसूरत समझते। हो सकता था, वह ख़ुद भी अपने को कम ख़ूबसूरत मानता। पर मुझे